स्त्री–विमर्श में सामाजिक चेतना

डॉ. महंथी प्रसाद यादव

विमर्श' का अर्थ है– जीवंत बहस। किसी भी समस्या या स्थिति को एक कोण से न देखकर भिन्न मानसिकताओं, दृष्टियों, संस्कारों और वैचारिक प्रतिबद्धताओं का समाहार करते हुए उलट–पट कर देखना, उसे समग्रता में समझने की कोशिश करना और फिर मानवीय सन्दर्भों में निष्कर्ष प्राप्ति की चेष्टा करना।

"भारत में स्त्री विमर्श अधिकतर आम मध्यवर्गीय सवर्ण स्त्री के सवालों से ही जूझता रहा है। यह दलित स्त्री के दमन–शोषण के प्रश्नों के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक आधार का समर्थन तो नहीं करता, परंतु इस आधार की वजह से अनवरत चल रहे दलित स्त्री की प्रताड़ना का उतना मुखर विरोध भी नहीं होता जितना दलित स्त्री के दमन के आधार को ध्वस्त करने के लिए आवश्यक है। उतना मुखर विरोध शायद संभव भी नहीं है। कारण दलित स्त्री के शोषण के आधार को ध्वस्त करने का अर्थ है मध्यवर्गीय सवर्ण नारीवादी की सम्पन्नता की नींव पर कुठाराघात करना। दलित स्त्री के सवालों को अपनाने के लिए नारी आंदोलनों को अपने कार्यक्षेत्र तथा सैद्धांतिक प्रतिबद्धता में परिवर्तन करना होगा।